

संपादक की कलम से.....

साए में धूप : ग़ज़ल की टकसाल

रामअवतार बैरवा

पचास बरस किसी भी व्यक्ति, संस्थान, समाज, व्यवस्था, प्रक्रिया, कला, संस्कृति और साहित्य के मापन के लिए परिपक्व समय माना जा सकता है। किसी भी व्यक्ति ने पचास बरस तक अगर कुछ पा लिया तो बेहतर है, उसके बाद कुछ भी कर पा लेने के लिए समय और परिस्थितियां साथ नहीं देती । दुष्यंत कुमार अपनी अन्य विधाओं को विराम देकर जब ग़ज़ल के क्षेत्र में उतरते हैं तो उनका हर शेर खुदा तक पहुंच जाता है। कोई भी बात अगर ईश्वर के हृदय को छू जाती है फिर ईश्वर उसे इस लोक में नहीं रखता।

'साए में धूप' दुष्यंत का आखिरी संग्रह था और ग़ज़लें उनकी आखिरी विधा। दुष्यंत के समकालीन आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। अभी 27 सितंबर 2026 को सुविख्यात गीतकार संतोष आनंद जी से बात हो रही थी तो उन्होंने कहा मेरा सबसे अच्छा और सच्चा मित्र दुष्यंत कुमार था–यारों का यार, बड़ा दिलदार। हम जब एक बार बैठ जाते थे तो कब सुबह हो जाती थी, पता ही नहीं चलता था। अभी कुछ दिन पहले दुष्यंत जी के बेटे आलोक जी से मैंने दुष्यंत जी की कुछ शेष स्मृतियां सांझा करने की दरख्वास्त की तो उन्होंने रोटरी क्लब के एक मंच की तस्वीर सांझा की । जिसमें दुष्यंत जी कविता पाठ कर रहे हैं और अमिताभ बच्चन मंच पर बैठे हैं। स्मरण रहे अमिताभ बच्चन की फिल्म दीवार देखने के बाद दुष्यंत जी ने 1975 में अमिताभ बच्चन को एक पत्र लिखा था । यह पत्र वे पोस्ट नहीं कर सके थे, इसी बीच उनका निधन हो गया। पत्र में उन्होंने अमिताभ को उनके पिता हरिवंश राय बच्चन के साथ बिताए संस्मरण भी सांझा किए थे । यह पत्र आज भी भोपाल स्थित दुष्यंत कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय में सुरक्षित रखा हुआ है। यह भी अवगत करवाना आवश्यक है कि हरिवंशराय बच्चन जी की अनुशंसा पर वरिष्ठ गीतकार डॉ. रमानाथ अवस्थी ने दुष्यंत कुमार को आकाशवाणी, दिल्ली में प्रस्तुति सहायक के पद पर नियुक्त किया था। बाद में उनका स्थानांतरण आकाशवाणी, भोपाल हो गया।

यूं तो सितंबर माह प्रतिवर्ष हिन्दी भाषा को समर्पित होता है। सरकारी और गैर–सरकारी विभागों के साथ–साथ पूरा देश हिन्दी के रंग में रंगा होता है पर यह सुखद संयोग है कि इसी माह सरकारी दस्तावेजों के अनुसार एक सितम्बर और परिजनों और मित्रों के अनुसार 27 सितंबर को दुष्यंत जी का जन्मदिन मनाया जाता है। दोनों ही दिवस सितंबर माह में आते हैं। हिन्दी दिवस की आभा में दुष्यंत कुमार का जन्मदिन भी पूरे साहित्य जगत की स्मृति में बना रहता है। उनकी ग़ज़लों के तमाम शेर इस आभा में चमक उठते हैं। 'साए में धूप' महज तीन शब्द नहीं, गरीब, मजदूर , मजबूर और बेबसों की पीड़ा को व्यक्त करने के मजबूत स्तंभ हैं। ये वर्ग जब भी साए की तलाश करता है, घूमते हुए धूप इन्हें घेर ही लेती है। सुबह समय पर आंख खुल भी जाए तब भी घर पर इतना काम होता है कि सूरज इनके सिर पर आ ही जाता है। पसीने और मेहनत के गारे में चुना हुआ 'साए में धूप' महज पचास बरस की नहीं, साहित्य के नभ पर बढ़े पूरे पांच सौ बरस का कथासार है–

' कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।'

कोई माने न माने पर दुष्यंत के इस संग्रह पर ही हिन्दी ग़ज़ल के महल खड़े हुए हैं।



दुष्यंत कुमार कविता पाठ करते हुए ।
बाएं ओर मंच पर बैठे अमिताभ बच्चन